PAGE No

20/11/20

पाठ-11
जब सिनेमा ने बोलना सीखा

4- पहली सवाक् — — — — — — लिखिए।

30- पहली सवाक् फिल्म के निर्माता-निर्देशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया, तब सम्मानकर्ताओं ने उन्हें 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता' कहकर उनका सम्मान किया।
इस अवसर पर निर्देशक ने कहा—"मुझे इतना बड़ा सम्मान देने की आवश्यकता नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।"
इस प्रसंग में लेखक ने टिप्पणी करते हुए कहा है कि वे अत्यंत विनम्र व्यक्ति थे। वे उस सवाक् सिनेमा के जनक थे, जिनकी उपलब्धि को भारतीय सिनेमा के जनक फाल्के को भी अपनाना पड़ा क्योंकि वहाँ से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

पाठ से आगे

2- डब फिल्में — — — — — — सकता है।

30- कभी-कभी सवाक् सिनेमा में अभिनय करने वाले अभिनेता और अभिनेत्रियाँ संवाद बोलते तो हैं पर उनकी अपनी आवाज नहीं होती है अर्थात वे किसी और के बोले संवाद पर अभिनय करते हैं। ऐसी फिल्में डब फिल्में कहलाती हैं।
कभी-कभी फिल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज में अंतर आ जाता है। इसका कारण यह है कि अभिनय और संवाद

संयोजन में कमी, संयोजन कर्ता का पूरी तरह दक्ष न होना, डब आवाज तथा अभिनय करने वाले के मुँह खोलने-बंद करने की असमान गति तथा अभिनेता की तालमेल बिठाने की असफलता के कारण ऐसा हो जाता है।

अतिरिक्त प्रश्न

1- 'सिनेमा ने बोलना सीखा' से आप क्या समझते हैं?

उ0- सन् 1931 के पहले देश में जो फिल्में बनती थीं, उनमें कलाकार अभिनय तो करते थे, पर उनकी आवाज हमें सुनाई नहीं पड़ती थी। 1931 में ऐसी फिल्म प्रदर्शित हुई, जिसमें कलाकारों की बातें, हँसना, रोना आदि सुनाई देने लगा। यह देखकर ऐसा लगा जैसे सिनेमा ने बोलना सीख लिया है।

2- 'मूक सिनेमा' से तुम क्या समझते हो? इसकी लोकप्रियता में कमी क्यों आने लगी?

उ0- मूक सिनेमा वे फिल्में होती थीं जिनमें कलाकार अभिनय करते थे। उनकी उछल-कूद एक्ट आदि हम देखते थे किंतु उनकी हँसी एवं संवाद नहीं सुन पाते थे। इसे ही मूक सिनेमा कहते हैं। लोगों की सवाक् सिनेमा में रूचि बढ़ी और इसकी लोकप्रियता में कमी आती गई।